हम पवित्र आत्मा पर विश्वास करते हैं

अध्याय 4

विश्वासी में

Manuscript

thirdmill

Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय....1
मन-परिवर्तन....2
नया बनाना....2
बोध कराना....5
पाप की अधिकता....6
पाप की दुष्टता....7
पाप की आक्रामकता....8
पाप की आशाहीनता....9
धर्मी ठहराना....9
पवित्र ठहराना....11
मसीही जीवन....13
वास करना....13
पवित्र ठहराना....16
मध्यस्थता करना....19
बनाए रखना....20
उपसंहार....22

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

परिचय

प्राचीन इस्राएल राज्य के दिनों में राजा दाऊद ने परमेश्वर के मंदिर का निर्माण करने की योजनाएँ बनाईं। उसने मंदिर का निर्माण करने और मंदिर की साज-सज्जा के लिए आवश्यक वस्तुओं को भी इकट्ठा किया, विशेषकर उसकी बहुमूल्य धातुओं और रत्नों को। परंतु मंदिर के वास्तविक भवन का निर्माण दाऊद के पुत्र सुलैमान को सौंपा गया। और जब सुलैमान ने मंदिर का निर्माण कार्य पूरा कर लिया तो परमेश्वर की महिमा ने उसे भर दिया, और परमेश्वर ने अपने नाम को निरंतर वहाँ स्थापित किया।

विश्वासियों के जीवन में परमेश्वर का कार्य भी कुछ ऐसा ही है। परमेश्वर पिता ने हमारे उद्धार की योजना बनाई। उसके पुत्र प्रभु यीशु ने हमारे उद्धार के लिए आवश्यक कार्य को पूरा किया। और पवित्र आत्मा हमें भरता है और हमारे भीतर वास करता है, और इस बात को आश्वस्त करता है कि पिता की योजनाएँ और पुत्र का कार्य हमारे जीवनों में सर्वदा तक प्रकट होते रहें। वास्तव में, कुरिन्थुस की कलीसियाओं को लिखी पौलुस की पहली पत्री में प्रेरित ने प्रत्यक्ष रूप में विश्वासियों की तुलना मंदिर से की क्योंकि पवित्र आत्मा हमारे भीतर वास करता है।

यह *हम पवित्र आत्मा पर विश्वास करते हैं* की हमारी श्रृंखला का चौथा अध्याय है। हमने इस अध्याय का शीर्षक "विश्वासी में" दिया है क्योंकि हम एक-एक विश्वासी पर उद्धार को लागू करने के पवित्र आत्मा के कार्य को देखेंगे।

उद्धार पूरी तरह से त्रिएक परमेश्वर का कार्य है। सरल शब्दों में, पिता ने हमारे उद्धार की योजना बनाई। वह ऐसा न्यायी है जिसके क्रोध को हमारे बदले मसीह के बलिदान के द्वारा शांत किया जाना जरूरी था। और वही है जो अनुग्रह से विश्वास के द्वारा मसीह में उद्धार प्रदान करता है। पुत्र ही है जो मसीह के रूप में देहधारी हुआ। और उसने अपने सिद्ध जीवन, बलिदानी मृत्यु, और जयवंत पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के द्वारा हमारे उद्धार को पूरा किया। परंतु यह प्राथमिक रूप से पवित्र आत्मा है जो विश्वासियों के जीवन में उद्धार के तत्वों को लागू करता है।

विधिवत धर्मविज्ञान में विश्वासियों के जीवन में उद्धार को लागू करने के पवित्र आत्मा के कार्य को सामान्यतः उद्धार-विज्ञान के रूप में समझा जाता है, जो कि उद्धार की धर्मशिक्षा है। उद्धार-विज्ञान को अक्सर ऐसे दो मुख्य भागों में समझा जाता है, जिन्हें उनके लैटिन शीर्षकों से जाना जाता है। एक ओर, *हिस्टोरिया साल्यूटिस,* या "उद्धार का इतिहास" परमेश्वर की उद्धार-संबंधी घटनाएँ और कार्य हैं जो अपने लोगों के लिए उद्धार को पूरा करते हैं। जैसा कि हमने पिछले अध्यायों में देखा है, पवित्र आत्मा ने नियति विधान के अपने बहुत से कार्यों के द्वारा *हिस्टोरिया साल्यूटिस* में हमेशा महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। दूसरी ओर, *ओर्डो साल्यूटिस,* अर्थात् "उद्धार का क्रम" वह तार्किक और व्यवस्थित क्रम है जिसमें पवित्र आत्मा एक-एक विश्वासी पर उद्धार के विभिन्न पहलुओं को लागू करता है। क्योंकि यह अध्याय विश्वासियों के जीवन में उद्धार को लागू करने में पवित्र आत्मा के कार्य पर ध्यान केंद्रित करता है, इसलिए हम प्राथमिक रूप से *ओर्डो साल्यूटिस* के पहलुओं पर चर्चा करेंगे।

हम विश्वासी के जीवन में पवित्र आत्मा के कार्य पर दो मुख्य शीर्षकों तले ध्यान देंगे। पहला, हम अपने विश्वास में आने के समय हमारे मन-परिवर्तन के दौरान उसके द्वारा उद्धार को लागू करने का अध्ययन करेंगे। और दूसरा, हम अपने मसीही जीवन में उद्धार को लागू करने के उसके निरंतर चलनेवाले कार्य को स्पष्ट करेंगे। आइए पहले हम मन-परिवर्तन के दौरान आत्मा के कार्य को देखें।

मन-परिवर्तन

शब्द "मन-परिवर्तन" एक बात से दूसरी बात में परिवर्तित होने को दर्शाता है। कुछ मसीही परंपराओं में मन-परिवर्तन एक सुपरिभाषित घटना है जो तब घटती है जब एक व्यक्ति उद्धार देनेवाले विश्वास को ग्रहण करता है। परंतु इस अध्याय में हम इस शब्द का प्रयोग उद्धार के आरंभिक चरणों को दर्शाने के लिए और अधिक सामान्य रूपों में करेंगे, फिर चाहे एक व्यक्ति उनका अनुभव कैसे भी करता हो।

> मन-परिवर्तन की प्रत्येक कहानी थोड़ी-बहुत अलग है, इसलिए हम सबको एक ही श्रेणी में रखने और यह कहने का प्रयास न करें कि ऐसा हुआ होगा। पर जो कुछ भी हो, यह पवित्र आत्मा का कार्य है कि वह हमें आकर्षित करे, हमसे प्रीति रखे, हमें पाप का बोध कराए, हमारे समक्ष उद्धार की आवश्यकता को प्रकट करे, और फिर हमें वास्तविक विश्वास प्रदान करे — जो कि यीशु पर भरोसा रखना है — जिसकी जरूरत हमें उद्धार पाने के लिए है।
>
> — रेव्ह. माइक ओसबोर्न

हम मन-परिवर्तन के समय पवित्र आत्मा के कार्य के चार पहलुओं पर विचार करेंगे। पहला, हम अपनी आत्माओं में उसके नए बनाने के कार्य को संबोधित करेंगे। दूसरा, हम उसके द्वारा हमें पापों का बोध कराने पर ध्यान देंगे। तीसरा, हम आत्मा के धर्मी ठहराने के कार्य के विषय में बात करेंगे जिसका परिणाम क्षमा और धार्मिकता होता है। और चौथा, हम अपने जीवनों में उसके पवित्र ठहराने की सामर्थ्य के आरंभिक पहलुओं का उल्लेख करेंगे। आइए हम पवित्र आत्मा के नए बनाने के कार्य के साथ आरंभ करें।

नया बनाना

शब्द "नया बनाना" का अर्थ है "फिर से रचना करना" या "नया जन्म।" औपचारिक धर्मविज्ञान में यह "वह घटना है जिसमें एक व्यक्ति आत्मिक मृत्यु की दशा से आत्मिक जीवन की दशा की ओर आगे बढ़ता है।" सब लोग आत्मिक मृत्यु की दशा में संसार में प्रवेश करते हैं। और हम तब तक आत्मिक रूप से मृत रहते हैं जब तक पवित्र आत्मा हमें नया नहीं बनाता। हम आत्मिक मृत्यु की अपनी दशा को आदम, पहले मनुष्य से प्राप्त करते हैं। जब उसने अदन की वाटिका में पाप किया तो परमेश्वर ने संपूर्ण मनुष्यतजाति को भौतिक और आत्मिक मृत्यु का शाप दिया। उस पल, आदम और हव्वा आत्मिक रूप से भ्रष्ट हो गए। और यह आत्मिक भ्रष्टता आत्मिक मृत्यु का सार है। रोमियों 7:14-25 में पौलुस ने इसका उल्लेख हमारे "पापी स्वभाव" के रूप में किया। उसने यह कहते हुए इसका वर्णन किया कि पाप हमारी देहों में वास करता है और हमारे मनों को भी वश में कर लेता है।

यही नहीं, आत्मिक मृत्यु आदम और हव्वा की प्राकृतिक रूप से जन्मी सब संतानों को प्रभावित करती है। जैसा कि पौलुस ने रोमियों 5:12-19 में संकेत किया, आदम परमेश्वर के सामने हमारा प्रतिनिधि था। अतः हम सब उसके अपराध में, और उस अपराध के भौतिक तथा आत्मिक मृत्यु के परिणामों में सहभागी हैं। यूहन्ना 3:5-7, रोमियों 8:10, और कुलुस्सियों 2:13 जैसे अनुच्छेद पुष्टि करते हैं कि प्रत्येक मनुष्य इस संसार में आत्मिक रूप से मृत अवस्था में आता है। केवल यीशु इस शाप से बचा रहा, जैसा कि हम इब्रानियों 4:15, और 7:26 में पढ़ते हैं।

अब, आत्मिक रूप से मृत होने पर भी हमारी आत्माएँ हमारी देहों को सजीव बनाए रखती हैं। और हम सोचना, महसूस करना, स्वप्न देखना, चुनाव करना और इस संसार के साथ कार्य करना जारी रखते हैं। परंतु हमारी आत्मिक भ्रष्टता और मृत्यु के फलस्वरूप मनुष्य परमेश्वर को प्रसन्न करने में नैतिक रूप से सक्षम नहीं हैं। हम में उसे प्रसन्न करने या उसकी आशीषों के योग्य बनने की कोई क्षमता नहीं है। हम उससे प्रेम नहीं करते। हमें उस पर विश्वास नहीं है। जो कुछ भी हम करते हैं वह हमारे पापमय हृदयों और अभिप्रायों से निकलता है। हम वास्तव में उसके क्रोध के ही योग्य हैं और हमें उद्धार की बहुत अधिक आवश्यकता है।

सन् 1619 में प्रकाशित *डॉक्ट्रिन ऑफ़ दी कैनन्स ऑफ़ डोर्ट* का तीसरा और चौथा मुख्य बिंदु आत्मिक मृत्यु की समस्या को इस रीति से सारगर्भित करता है :

> सब लोगों का जन्म पाप में हुआ और वे क्रोध की संतान के रूप में जन्मे हैं, तथा किसी भी भले कार्य के लिए अनुपयुक्त हैं, बुराई करने की ओर झुकते हैं, अपने पापों में मृत हैं, और पाप के दास हैं; नया जन्म देनेवाले पवित्र आत्मा के अनुग्रह के बिना वे न तो परमेश्वर के पास लौटना चाहते हैं और न लौट सकते हैं ताकि उनका विकृत स्वभाव सुधर सके, या फिर वे ऐसे सुधार के प्रति स्वयं को समर्पित कर सकें।

जैसे कि पौलुस ने रोमियों 8:6-8 में लिखा :

> शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है... शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योंकि न तो [यह] परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन है और न हो सकता है; और जो शारीरिक दशा में हैं, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते (रोमियों 8:6-8)।

यह मनुष्यजाति के लिए एक भयानक स्थिति है। परंतु साथ ही, यह वह कारण भी है जिसके लिए नया जन्म इतना महत्वपूर्ण है।

> नया जन्म एक धर्मवैज्ञानिक शब्द है और यदि मैं वायने ग्रूडम के शब्दों में कहूँ तो यह "परमेश्वर के उस गुप्त कार्य को जिसमें वह हम में नया जीवन डालता है" दर्शाता है। अतः नया जन्म परमेश्वर के आत्मा का अलौकिक कार्य है। यह हृदय को नया बनाने और ईश्वरीय समानता में परिवर्तित करने के विषय में है। यह एक पापी के जीवन में एक परिवर्तन है। एक नया जन्म पाया व्यक्ति वह है जिसकी आत्मिक मृत्यु को आत्मिक जीवन में बदल दिया गया है। नया जन्म पाना एक सच्चे विश्वासी का विशिष्ट चिह्न है। नया जन्म पाना लोगों के हृदयों को बदलने में परमेश्वर का कार्य है। यहेजकेल नबी "पत्थर के हृदय को हटाकर उसके स्थान पर मांस के हृदय को रखने" जैसे शब्दों का प्रयोग करता है।
>
> — रेव्ह. कैनन एल्फ्रेड सेबा हेने, पीएच. डी.

नए जन्म में हमारी आत्माएँ आत्मिक मृत्यु से निकलकर आत्मिक जीवन में प्रवेश करती हैं। हम मृत्यु से निकलकर जीवन में प्रवेश करने के इस कार्य को यूहन्ना 5:24, इफिसियों 2:4, 5, और कुलुस्सियों 2:13 जैसे स्थानों में देखते हैं। और अन्य स्थानों में पवित्रशास्त्र नए सिरे से जन्म लेने के रूप में इस प्रक्रिया का वर्णन करता है। जैसा कि यीशु ने यूहन्ना 3:3-6 में कहा :

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

> यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता... जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है (यूहन्ना 3:3-6)।

यूनानी क्रिया-विशेषण *अनोथेन* जिसका अनुवाद नए सिरे से जन्म लेने में “नए सिरे से” के रूप में किया गया है, उसका अनुवाद “ऊपर से” के रूप में भी किया जा सकता है। और इस संदर्भ में दोनों अर्थ सही हैं। हम ऊपर से एक दूसरे जन्म को, अर्थात् हमारी आत्मा के जन्म को प्राप्त करते हैं, जो पवित्र आत्मा की ओर से होता है। निस्संदेह, सब मनुष्यों में आत्माएँ होती हैं जो हमारी देहों को सजीव बनाती है। परंतु केवल विश्वासियों के पास आत्मिक *जीवन* होता है, क्योंकि केवल विश्वासियों को ही पवित्र आत्मा के द्वारा नया बनाया गया है। सुनिए पौलुस ने तीतुस 3:5 में क्या कहा :

> [परमेश्वर] ने हमारा उद्धार... नए जन्म के स्नान और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा [किया] (तीतुस 3:5)।

कुछ अनुवादों में यहाँ “नए जन्म" के रूप में अनूदित यूनानी शब्द *पालीगेनेसिया* का अनुवाद “नया बनाने” के रूप में किया गया है जो एक और बिलकुल सटीक अनुवाद है।

जब पवित्र आत्मा हमें नया बनाता है तो वह हमारी आत्माओं को जीवन देता है और हमें परमेश्वर की ओर मोड़ता है। जैसा कि पौलुस ने रोमियों 6:4-14 में सिखाया, हमारा नया जन्म पाप के प्रति हमारी मृत्यु, और पाप की गुलामी से हमारी स्वतंत्रता भी है।

कुछ सुसमाचारिक परंपराएँ मानती हैं कि उद्धार देनेवाले विश्वास को क्रियान्वित करने के बाद ही पवित्र आत्मा हमें नया जन्म प्रदान करेगा। अन्य तर्क देते हैं कि नया जन्म न पाया हुआ व्यक्ति उद्धार देनेवाले विश्वास को प्राप्त या क्रियान्वित नहीं कर सकता, और इसलिए वह नया जन्म तार्किक रूप से पहले आना चाहिए। परंतु हम सबको इस बात पर सहमत होना चाहिए कि नया जन्म एक ऐसा अनुग्रहकारी और चमत्कारिक कार्य है जो प्राकृतिक संसार की सामान्य गतिविधियों को बदल देता है। जब पवित्र आत्मा हमें नया जन्म प्रदान करता है, तो वह हमारी आत्माओं को जीवन प्रदान करने के द्वारा मरे हुए को जिलाता है। और वह हमारी नैतिक योग्यता को पुनर्स्थापित करने, और हमें ऐसे नए हृदय देने के द्वारा जो परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहते हैं, मनुष्यों के रूप में हमारे स्वभाव को बदल देता है।

> एक नए सिरे से जन्मा हुआ हृदय वह है जिसमें आत्मा का धड़कने वाला जीवन होता है और वह हमें एक नए तरीके में परमेश्वर को दिखाता है ताकि हम यह देख सकें कि वह हमारे प्रति अनुग्रहकारी है। और वह हमारी जरूरत के समय, दया और अनुग्रह की हमारी बड़ी जरूरत के समय एक पिता के रूप में आता है। और इसलिए वह इस रीति से हमारे पास आता है और हमें प्रेरित करता है; हम उससे प्रेम करते हैं। और यह वही है जिसकी सेवा हम अपने हृदय की गहराई से करना चाहते हैं, और यह हमारी नई पहचान के लिए अब निर्णायक बन जाता है। और मेरे विचार में इसे एक नए प्रेम या एक नए स्वामी जिसकी हम सेवा करेंगे, के द्वारा परिभाषित किया जाता है।
>
> — डॉ. मार्क सौसी

पवित्र आत्मा के द्वारा हमारी आत्माओं को नया बनाने के आधार पर मन-परिवर्तन पर विचार कर लेने के बाद, आइए अब हम हमें पाप का बोध कराने के उसके कार्य के बारे में बात करें।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

बोध कराना

धर्मविज्ञान में शब्द "बोध" का अर्थ यह है, "अपने पाप के दोष और उसकी अनुपयुक्तता के बारे में जानकारी।" यीशु ने यूहन्ना 16:8-11 में पवित्र आत्मा के बोध कराने के कार्य के बारे में बात की, जहाँ हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> वह आकर संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में [बोध कराएगा]। पाप के विषय में इसलिये कि वे मुझ पर विश्वास नहीं करते; और धार्मिकता के विषय में इसलिये कि मैं पिता के पास जाता हूँ, और तुम मुझे फिर न देखोगे; न्याय के विषय में इसलिये कि संसार का सरदार दोषी ठहराया गया है (यूहन्ना 16:8-11)।

पवित्र आत्मा हमें हमारे पाप का बोध कराता है ताकि वह उद्धार के लिए हमें प्रभु यीशु मसीह की ओर अग्रसर करे। पवित्र आत्मा हमें पाप के बारे में जागरूक करके अपना कार्य आरंभ करता है ताकि हम अपने दोष को मान लें। वह हमें इस बात पर सहमत होने के लिए प्रेरित करता है कि हम न्यायोचित रूप में परमेश्वर के क्रोध के लायक हैं। वह हमारे भीतर उस गलत कार्य के प्रति नम्रता या टूटापन उत्पन्न करता है जो हमने किया है। और वह इस आशा में हमारी अगुवाई अपने पापों को मानने और उनसे मन फिराने की ओर करता है कि हम यीशु में क्षमा और उद्धार को प्राप्त करें।

बोध कराना पवित्र आत्मा के पहले कार्यों में से एक है जब वह अविश्वासियों को विश्वास करने की बुलाहट देता है। अब पवित्र आत्मा बहुत से लोगों को ऐसे रूपों में बुलाता और बोध कराता है जो उद्धार से रहित होते हैं। लोग मन फिराव और विश्वास के लिए बुलाए गए हो सकते हैं, वे अपनी पापमयता को सच्चाई से पहचान सकते हैं, और फिर भी हो सकता है कि वे मसीह की ओर न मुड़ें। उदाहरण के लिए, यशायाह 59:12 में भविष्यवक्ता ने परमेश्वर के पापमय वाचाई लोगों का वर्णन इस प्रकार किया :

> हमारे अपराध हमारे संग हैं और हम अपने अधर्म के काम जानते हैं (यशायाह 59:12)।

लोगों को तब तक वैसे-वैसे बोध होता रहा जैसे-जैसे उन्होंने अपने पाप को पहचाना और माना। परंतु पद 20 में यहोवा ने यह घोषणा की :

> याकूब में जो अपराध से मन फिराते हैं उनके लिये सिय्योन में एक छुड़ानेवाला आएगा (यशायाह 59:20)।

यह पर्याप्त नहीं था कि लोग विश्वास की बुलाहट को प्राप्त करें और बोध का अनुभव करें। छुटकारा पाने के लिए उन्हें मन फिराना भी जरूरी था।

परंतु जब हम मन-परिवर्तन के एक भाग के रूप में आत्मा के बोध कराने के कार्य के बारे में बात करते हैं, तो हमारे मन में वे लोग होते हैं जिनमें आत्मा की बुलाहट "प्रभावशाली" होती है — अर्थात् उनमें जिनमें उसका अनुग्रहकारी प्रभाव सच्चे मन-फिराव और उद्धार को उत्पन्न करता है। यह एक विशेष कार्य है जो न केवल हमें सुसमाचार को सुनने के लिए तैयार करता है, बल्कि हम पर सुसमाचार को लागू भी करता है।

हम बोध के इस प्रकार के एक अच्छे उदाहरण को प्रेरितों के काम 2 में पतरस के संदेश में पाते हैं। मसीह के स्वर्गारोहण के बाद पहले पिंतेकुस्त पर पतरस ने यरूशलेम में एकत्रित यहूदियों की एक बड़ी भीड़ के समक्ष सुसमाचार का प्रचार किया। और पवित्र आत्मा ने अपने उद्धार के कार्य में उनमें से

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

बहुतों को उनके पाप का बोध कराया, और उसके फलस्वरूप हजारों लोगों ने विश्वास किया। प्रेरितों के काम 2:37-41 में लूका के विवरण को सुनें :

> तब सुननेवालों के हृदय छिद गए, और वे... पूछने लगे, “हे भाइयो, हम क्या करें?” पतरस ने उनसे कहा, “मन फिराओ, और तुम में से हर एक... बपतिस्मा ले... [और] उस ने... समझाया कि अपने आप को इस टेढ़ी जाति से बचाओ। अत: जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन तीन हज़ार मनुष्यों के लगभग उनमें मिल गए (प्रेरितों के काम 2:37-41)।

“हृदय छिद गए” वाक्यांश उसका वर्णन करता है जिसे हमने “बोध” कहा है, जिसके फलस्वरूप उस दिन 3,000 लोगों ने उद्धार पाया।

जब पतरस ने लोगों को मन फिराने और बपतिस्मा लेने के लिए बुलाया तो उसने उस बात की पुष्टि की जो हम उद्धार देनेवाले बोध के बारे में कहते आ रहे हैं। यह पूरी तरह से संभव है कि जिन लोगों ने पतरस के शब्दों को सुना था उनमें से कुछ को सामान्य भाव में बोध हुआ, परंतु आत्मा के उद्धार देनेवाले कार्य के रूप में नहीं, इसलिए उन्होंने मन फिराने और उद्धार पाने से इनकार कर दिया। परंतु जिनमें वह बुलाहट प्रभावशाली थी, उन्होंने *उद्धार देनेवाले* बोध का अनुभव किया। उन्होंने अपने पाप को पहचाना और उसका अंगीकार किया, वे सच्चाई के साथ उस पर शोकित हुए, और मन-फिराव और बपतिस्मा के लिए प्रेरित हुए।

हम देख सकते हैं कि बोध और मन फिराव अन्यजातिय कुरनेलियुस और उसके घराने के मन-परिवर्तन के प्रति कलीसिया के प्रत्युत्तर में पवित्र आत्मा का कार्य था। कुरनेलियुस के मन-परिवर्तन से पहले कलीसिया में केवल यहूदी लोग ही थे। अतः प्रेरितों के काम 10:44, 45 में यहूदी विश्वासी चकित रह गए जब कुरनेलियुस और उसके घराने पर पवित्र आत्मा उंडेला गया। परंतु जब उन्होंने कुरनेलियुस और उसके घराने के विषय में समाचार सुना तो उन्होंने अन्यजातियों के लिए परमेश्वर की स्तुति की। सुनिए प्रेरितों के काम 11:18 में कलीसिया ने क्या कहा :

> परमेश्वर ने अन्यजातियों को भी जीवन के लिये मन फिराव का दान दिया है (प्रेरितों के काम 11:18)।

इन शब्दों को सकारात्मक रूप से उद्धृत करने के द्वारा लूका ने पहचाना कि कलीसिया सही थी — बोध और मन फिराव पवित्र आत्मा के वरदान के भाग हैं।

उद्धार देनेवाले बोध का वर्णन कई रूपों में किया जा सकता है : परंतु हमारे उद्देश्यों के लिए हम चार सामान्य तत्वों पर ही ध्यान देंगे। पहला, पवित्र आत्मा का बोध करानेवाला कार्य हमें अपने पाप की अधिकता के विषय में अवगत कराता है।

पाप की अधिकता

पतित मनुष्य — और यहाँ तक कि छुड़ाए हुए मनुष्य भी — केवल कभी-कभी पाप नहीं करते हैं। हम हर समय पाप करते हैं। हम पापमय विचारों को सोचते हैं; हम पापमय शब्दों को बोलते हैं; हम पापमय कार्य करते हैं। जैसा कि हम सभोपदेशक 7:20 में पढ़ते हैं :

> पृथ्वी पर कोई ऐसा धर्मी मनुष्य नहीं जो भलाई ही करे और जिस से पाप न हुआ हो (सभोपदेशक 7:20)।

और जैसा कि प्रेरित यूहन्ना ने 1 यूहन्ना 1:8 में कहा :

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

> यदि हम कहें कि हम में कुछ भी पाप नहीं, तो अपने आप को धोखा देते हैं, और हम में सत्य नहीं (1 यूहन्ना 1:8)।

हम ऐसे ही विचारों को उत्पत्ति 8:21, रोमियों 3:23, याकूब 3:2, और अन्य कई स्थानों पर पाते हैं।

और भी बुरी बात यह है कि हम सब केवल पाप ही नहीं करते, बल्कि हम *बहुत अधिक* पाप करते हैं। भजन 40:12 में दाऊद ने लिखा कि उसके पाप उसके सिर के बालों से भी अधिक थे। और वह परमेश्वर के मन के निकट रहनेवाला व्यक्ति था! अतः अविश्वासियों के पाप तो और भी अधिक हैं। इसी कारण, पवित्र आत्मा के बोध कराने के उद्धार-संबंधी कार्य का एक भाग हमें इस बात से अवगत कराना है कि हम वास्तव में कितने पापमय हैं। वह दिखाता है कि हम कितने बुरे तरीके से, और कितना अधिक पाप करते हैं।

> यह बात रोचक है कि उत्पत्ति 6:5 में ही हमें यह बताया गया है कि हमारे मनों के विचारों में "निरन्तर बुरा ही होता है," — और "मन" हमारे व्यक्तित्व का केंद्र है। इसका अर्थ है कि हम मनुष्य किसी बात को प्राप्त करने, उपलब्धि हासिल करने, और अधिकार करने की स्वार्थी अभिलाषा के वश में रहते हैं, और वह बात हमारे हर कार्य में पाई जाती है। यदि आप यह मानकर चलते हैं कि मनुष्य स्वाभाविक रूप से अच्छे हैं, तो आप मानवीय स्वभाव को समझ नहीं सकते। वास्तव में, जब आप मनुष्यजाति के इतिहास को देखते हैं तो आप कहेंगे कि नहीं, हम स्वाभाविक रूप से अच्छे नहीं हैं; हम तो स्वाभाविक रूप से बुरे होकर आत्म-केंद्रित हैं।
>
> — डॉ. जॉन ऑस्वाल्ट

आत्मा के उद्धार-संबंधी बोध का दूसरा आम पहलू यह है कि यह हमें पाप की दुष्टता के प्रति संवेदनशील बनाता है।

पाप की दुष्टता

जब पवित्र आत्मा हमें पाप का बोध कराता है तो वह हमें दिखाता है कि हमारा पाप किसी प्रकार की कोई भूल, या तकनीकी गलती नहीं है। यह घिनौना, घृणास्पद, कुत्सित है। यह वह बुरी भ्रष्टता है जो हमारी देहों और आत्माओं को सड़ा देती है। यह इतना भयानक है कि इसके कारण परमेश्वर के एकलौते पुत्र को हमें बचाने के लिए मरना पड़ा।

यशायाह 64:6 में इस्राएल के पाप के बारे में बात करते हुए भविष्यवक्ता यशायाह ने कहा कि लोग अशुद्ध हो गए थे। जो कार्य उन्हें धर्मी जान पड़ते थे, वे वास्तव में कुछ और नहीं बल्कि मैले चिथड़ों के समान थे। और अपने पाप के परिणामस्वरूप लोग नाश हो रहे थे। और यीशु द्वारा व्यवस्थापकों और फरीसियों को झिड़कना ऐसा ही था। मत्ती 23:27 में उसने उनकी तुलना चूना फिरी हुई कब्रों से की जिनके भीतर मुर्दों की हड्डियाँ और मलिनता भरी रहती है।

रोमियों 7 में पौलुस ने यह स्पष्ट करने में सहायता की कि कैसे पाप की दुष्टता हमारे मन फिराव और उद्धार के लिए कार्य कर सकती है। उस अध्याय के संदर्भ में उसने सिखाया कि परमेश्वर की पवित्र, धर्मी और शुद्ध व्यवस्था अविश्वासियों में पाप को भड़काती है। परंतु यह इस कार्य को ऐसे करती है कि पवित्र आत्मा इसका इस्तेमाल यह प्रकट करने में कर सकता है कि पाप वास्तव में कितना घिनौना है। रोमियों 7:13 में पौलुस ने यह स्पष्ट किया :

> पाप उस अच्छी वस्तु के द्वारा मेरे लिये मृत्यु का उत्पन्न करनेवाला हुआ कि उसका पाप होना प्रगट हो, और आज्ञा के द्वारा पाप बहुत ही पापमय ठहरे (रोमियों 7:13)।

यहाँ पौलुस ने कहा कि "अच्छी वस्तु" और "आज्ञा" — ये दोनों व्यवस्था को दर्शाती हैं — ने पाप की पापमयता को प्रकट किया।

कई रूपों में, नया जन्म न पाए हुए लोग पाप के साथ सहज महसूस करते हैं। हम स्वयं को अधिकतर अच्छा मानने की प्रवृत्ति रखते हैं, और हम अपनी कमियों और असफलताओं को कम आंकते हैं। और ऐसा करने के कई कारण हैं। पाप परिचित है, इसलिए हम उसके साथ संतुष्ट रहते हैं। पाप उस गलत कार्य को न्यायोचित ठहराता है जो हम करते हैं, इसलिए यह हमें अपने विषय में बेहतर महसूस कराता है। पाप हमारी अभिलाषाओं को पूरा करने का प्रस्ताव देता है, इसलिए यह आकर्षक होता है। परंतु हम पाप को इसलिए स्वीकार करते हैं क्योंकि हम स्वयं पापमय हैं। और स्वयं से घृणा करने की अपेक्षा हम स्वयं का प्रयोग एक ऐसे मानक के रूप में करते हैं जिसके द्वारा हम संसार के बाकी लोगों का निर्णय सुनाते हैं। हम बातों को वैसे नहीं देखते जैसे परमेश्वर देखता है, और हम उसकी नैतिकता से सहमत नहीं होते। अतः पवित्र आत्मा की भूमिका का एक भाग पतित मनुष्यों को वह दिखाना है जो परमेश्वर देखता है। मन-परिवर्तन में पवित्र आत्मा हमारी आँखों को खोल देता है ताकि हम पाप को वैसे देखें जैसे परमेश्वर देखता है — अर्थात् किसी सच्ची, सुंदर, और भली वस्तु की भयानक भ्रष्टता के रूप में।

पवित्र आत्मा के बोध कराने के उद्धार-संबंधी कार्य का एक तीसरा पहलू यह है कि यह हमें परमेश्वर के प्रति किए पाप की आक्रामकता के बारे में अवगत कराता है।

पाप की आक्रामकता

पवित्र आत्मा के उद्धार के बोध कराने के कार्य के अंतर्गत पापी यह महसूस करते हैं कि उनका पाप परमेश्वर के पवित्र चरित्र को चोटिल करता है, उसकी पवित्र व्यवस्था का उल्लंघन करता है, और न्यायोचित रूप से उसके प्रकोप के योग्य बनता है। पवित्रशास्त्र से इसके कुछेक उदाहरणों को सुनें। एज्रा 9:6 में एज्रा ने प्रार्थना की :

> "हे मेरे परमेश्वर! मुझे तेरी ओर अपना मुँह उठाते लाज आती है, और हे मेरे परमेश्वर! मेरा मुँह काला है; क्योंकि हम लोगों के अधर्म के काम हमारे सिर पर बढ़ गए हैं, और हमारा दोष बढ़ते बढ़ते आकाश तक पहुँचा है (एज्रा 9:6)।

यशायाह 59:12 में भविष्यवक्ता ने अंगीकार किया :

> क्योंकि हमारे अपराध तेरे सामने बहुत हुए हैं, हमारे पाप हमारे विरुद्ध साक्षी दे रहे हैं; हमारे अपराध हमारे संग हैं और हम अपने अधर्म के काम जानते हैं (यशायाह 59:12)।

और यिर्मयाह 14:7 में यिर्मयाह ने यह प्रार्थना की :

> हे यहोवा, हमारे अधर्म के काम हमारे विरुद्ध साक्षी दे रहे हैं, हम तेरा संग छोड़कर बहुत दूर भटक गए हैं, और हम ने तेरे विरुद्ध पाप किया है (यिर्मयाह 14:7)।

बोध कराने का यह पहलू है जो हमें अपनी खोई हुई और दोषी अवस्था का एहसास कराता है। हम पाते हैं कि परमेश्वर का न्याय सच्चा है और कि हमारे पाप ने हमें इसकी गलत दिशा की ओर रखा है, जिससे कि हम दोषी ठहराए जाएँ और उसके क्रोध और दंड की अपेक्षा करें।

पवित्र आत्मा के बोध कराने के उद्धार-संबंधी कार्य का एक चौथा पहलू यह है कि यह हमें पाप की आशाहीनता को दिखाता है।

पाप की आशाहीनता

पाप हमें आशाहीनता की स्थिति में रखता है क्योंकि यह हमें परमेश्वर को प्रसन्न करने या उसकी आशीषों को अर्जित करने के योग्य बनाता है। पाप की भ्रष्टता के कारण हम अपने उद्धार की तो बात छोड़ो, परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए भी कुछ नहीं कर सकते। इसी कारण पौलुस रोमियों 5:6 में हमें "निर्बल" कहता है।

> मनुष्यजाति के पाप में पतन ने परमेश्वर को प्रसन्न करने की हमारी योग्यता को पूरी तरह से प्रभावित कर दिया। इस विषय में सोचना रोचक है कि पतन से पहले आदम जो कुछ भी करता था उससे परमेश्वर प्रसन्न होता था, केवल भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष के फल को खाने को छोड़कर। परंतु जब वह पाप कर लिया गया, और जब हमारे हृदय, मन, प्राण, अस्तित्व में हमारे जीवन प्रभावित हो गए तो अब जो कुछ भी हम करते हैं वह पापमय है। और इसलिए हमारे द्वारा किए गए धर्मी कार्य भी, या वे जिन्हें हम "धर्मी" कार्य कहते हैं, पाप से मुक्त नहीं हैं... और इसलिए हमारा पतन पूर्ण है। और मसीह के अनुग्रहकारी कार्य के बिना हम ऐसा कोई कार्य नहीं कर सकते जो हमारे परमेश्वर को प्रसन्न करे और उसे आदर दे।
>
> — डॉ. जेफ़ लोमैन

क्योंकि पाप हमें इस आशाहीन स्थिति में रखता है इसलिए हम क्षमा और उद्धार के लिए पूरी तरह से परमेश्वर के अनुग्रह पर निर्भर हैं। इसी कारण पवित्रशास्त्र के लेखकों ने इस बात पर बल दिया कि उद्धार कार्यों के द्वारा नहीं बल्कि अनुग्रह से प्राप्त होता है। जैसा कि पौलुस ने इफिसियों 2:8-9 में लिखा :

> विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है; और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है, और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे (इफिसियों 2:8-9)।

यह पवित्र आत्मा का बोध करानेवाला कार्य ही है जो इस समझ की ओर हमारी अगुवाई करता है। यह हमसे प्रयास कराता है कि हम निराशा में अपने कार्यों के द्वारा उद्धार को खोजें और परमेश्वर की दया और अनुग्रह के बिना अपनी असहाय स्थिति को पहचानने में हमारी अगुवाई करता है। इसके फलस्वरूप यह मन फिराव की ओर हमारी अगुवाई करता है, और इस विश्वास के साथ भरोसा रखता है कि परमेश्वर हमारे पापों को क्षमा करेगा और मसीह में अपने प्रिय बच्चों के रूप में स्वीकार करेगा।

अब जबकि हमने पवित्र आत्मा द्वारा हमारी आत्माओं को नया बनाने और हमें पाप का बोध कराने के संदर्भ में मन-परिवर्तन को संबोधित कर लिया है, इसलिए आइए हम हमें धर्मी ठहराने के उसके कार्य पर ध्यान दें।

धर्मी ठहराना

प्रोटेस्टेंट धर्मविज्ञान में तकनीकी शब्द "धर्मी ठहराना" परमेश्वर की उस "कानूनी घोषणा को दर्शाता है जिसमें वह एक पापी को उसके दोष से मुक्त करता है और उसे मसीह की धार्मिकता प्रदान करता है।" शब्द "धर्मी ठहरना" और उससे संबंधित क्रिया "धर्मी ठहराना," और साथ ही "धर्मी" और

"धार्मिकता" जैसे शब्द, शब्दों के एक ऐसे समूह से आते हैं जो यूनानी क्रिया *डिकाईऊ* (*dδικαιόω*) से संबंधित है। पूरे नए नियम में ये शब्द पापियों को क्षमा करने और उन्हें परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी ठहराने के परमेश्वर के कार्य को नियमित रूप से दर्शाते हैं। हम इसे रोमियों 3:30; 4:5; 5:1, 9; 1 कुरिन्थियों 6:11; गलातियों 3:8, 11; और कई अन्य स्थानों में देखते हैं।

यही नहीं, नया नियम नियमित रूप से सिखाता है कि पापियों को विश्वास के द्वारा धर्मी बनाया, या ठहराया जाता है, जिसका आधार हमारे स्थान पर मसीह का प्रायश्चित का बलिदान है। केवल एक उदाहरण के रूप में रोमियों 3:22-24 में पौलुस ने लिखा :

> परमेश्वर की वह धार्मिकता जो यीशु मसीह पर विश्वास करने से सब विश्वास करनेवालों के लिये है... [वे] उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंतमेंत धर्मी ठहराए जाते हैं (रोमियों 3:22-24)।

विधिवत धर्मविज्ञान में हम सामान्यतः धर्मी ठहराए जाने को मसीह के कार्य के संदर्भ में देखते हैं। आखिरकार, यह उसकी बलिदानी मृत्यु ही है जो हमें अपनी क्षमा का कानूनी आधार प्रदान करती है। और उसका पुनरुत्थान ही है जो हमें धर्मी आधार और नया जीवन प्रदान करता है जिसे हम क्षमा किए जाने के बाद एक दूसरे से बाँटते हैं। परंतु पवित्र आत्मा हमारे धर्मी ठहराए जाने में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। मसीह का कार्य ऐतिहासिक था — हमेशा के लिए एक बार। परंतु पापियों को पूरे इतिहास में — मसीह के समय से पहले, उसके दौरान और बाद में — धर्मी ठहराए जाने की जरूरत रही है। और यह पवित्र आत्मा ही है जो हर समयावधि के विश्वासियों के जीवन में मसीह के कार्य के धर्मी ठहराने के लाभों को लागू करने के द्वारा इस समस्या को सुलझाता है।

सुनिए पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 6:11 में क्या कहा :

> तुम प्रभु यीशु मसीह के नाम से और हमारे परमेश्वर के आत्मा से धोए गए और पवित्र हुए और धर्मी ठहरे (1 कुरिन्थियों 6:11)।

पौलुस ने पुष्टि की कि हम यीशु के नाम में धर्मी ठहरे हैं, अर्थात् हम उसके अधिकार और उद्धार के कार्य के आधार पर धर्मी घोषित किए गए हैं। परंतु उसने यह भी कहा कि हम पवित्र आत्मा में और उसके द्वारा धर्मी ठहराए जाते हैं क्योंकि वही है जो हम पर धार्मिकता को लागू करता है। हम ऐसी ही बात रोमियों 14:17 में देखते हैं, जहाँ पौलुस ने यह लिखा :

> परमेश्वर का राज्य... धर्म और मेलमिलाप और वह आनन्द है जो पवित्र आत्मा से होता है (रोमियों 14:17)।

हमारी धार्मिकता, या हमारा धर्मी ठहराया जाना हमारे स्थान पर मसीह के बलिदान पर आधारित है। परंतु हम इसका अनुभव पवित्र आत्मा में करते हैं क्योंकि आत्मा ही वह ईश्वरीय व्यक्तित्व है जो इसे हम पर लागू करता है।

तीतुस को लिखी अपनी पत्री में पौलुस ने हम पर पवित्र आत्मा द्वारा धार्मिकता को लागू करने के कार्य को हमारे नए जन्म के साथ जोड़ा। उसने कहा कि हमारा धर्मी ठहराया जाना हमारी नहीं, बल्कि मसीह की धार्मिकता पर निर्भर था। और उसने दर्शाया कि पवित्र आत्मा ने हमारे नए जन्म के समय मन-परिवर्तन के अपने कार्य के एक भाग के रूप में मसीह की धार्मिकता को हम पर लागू किया। हम इस विचार को तीतुस 3:5-7 में देखते हैं जहाँ पौलुस ने यह लिखा :

> [परमेश्वर ने] हमारा उद्धार किया; और यह धर्म के कामों के कारण नहीं, जो हम ने आप किए, पर अपनी दया के अनुसार नए जन्म के स्नान और पवित्र आत्मा के

> हमें नया बनाने के द्वारा हुआ... जिस से हम उसके अनुग्रह से धर्मी ठहरकर, अनन्त जीवन की आशा के अनुसार वारिस बनें (तीतुस 3:5-7)।

पौलुस ने पहले कहा कि हमारा "उद्धार... पवित्र आत्मा के... द्वारा हुआ।" इसलिए जब उसने कहा कि हम धर्मी ठहराए गए तो उसका अर्थ था कि आत्मा के उद्धार के कार्य में धर्मी ठहराना शामिल होता है।

धर्मविज्ञानियों ने अक्सर धर्मी ठहराए जाने का वर्णन इसके नकारात्मक और सकारात्मक तत्वों के संदर्भ में किया है। नकारात्मक पहलू में धर्मी ठहराया जाना हमारे पापों को क्षमा करने के द्वारा हमारे दोष को रद्द या निरस्त करता है ताकि हम फिर परमेश्वर के दंड के अधीन न रहें। जैसा कि हमने पहले पढ़ा था, हमारे पापों की क्षमा में पवित्र आत्मा की सहभागिता का उल्लेख 1 कुरिन्थियों 6:11, और तीतुस 3:5 में किया गया है। ये दोनों पद हमें पाप से साफ़ करने के लिए आत्मा के द्वारा हमें "धोने" या उसके "स्नान" के बारे में बात करते हैं।

और सकारात्मक पहलू में धर्मी ठहराया जाना हमें परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी घोषित करता है ताकि हमारे पास एक अनंत मीरास और उससे जुड़े सब लाभों को प्राप्त करने का अधिकार हो। सुनिए पौलुस ने इफिसियों 1:13-14 में क्या लिखा :

> तुम ने विश्‍वास किया, [और तुम पर मसीह में] प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी। वह... हमारी मीरास का बयाना है (इफिसियों 1:13-14)।

पौलुस के मन में जो मीरास थी उसमें उद्धार की सब आशीषें सम्मिलित थीं, जिनमें से बहुतों का उल्लेख इफिसियों 1:4-12 में किया गया है। उन पदों में उसने पवित्रता, पुत्रों के रूप में लेपालकपन, छुटकारे, क्षमा, परमेश्वर के अनुग्रह के धन, और मसीह में स्वर्ग और पृथ्वी की सब बातों की पूर्णता का उल्लेख किया। इनमें से प्रत्येक वस्तु मसीह में हमारी मीरास का भाग है। और उनमें से प्रत्येक वस्तु का आश्वासन हमें पवित्र आत्मा के द्वारा दिया गया है।

अब तक हमने पवित्र आत्मा द्वारा हमें नया बनाने, हमें पाप का बोध कराने, और हमें धर्मी ठहराने पर विचार करने के द्वारा मन-परिवर्तन पर चर्चा की है। इसलिए आइए अब हम अपना ध्यान उसके पवित्र ठहराने के कार्य के आरंभिक पहलुओं पर लगाएँ।

पवित्र ठहराना

सरल शब्दों में पवित्र ठहराना "लोगों और वस्तुओं को पवित्र बनाने का कार्य है।" आत्मा के पवित्र ठहराने के कार्य में परमेश्वर के उपयोग के लिए लोगों और वस्तुओं को अलग करना, उन्हें शुद्ध करना, और परमेश्वर की प्रकट महिमा के निकट रहने के लिए उपयुक्त बनाना शामिल है।

> जब बाइबल परमेश्वर का वर्णन पवित्र के रूप में करती है तो यह वास्तव में ऐसी धारणा का अनुसरण करती है जिसका प्राथमिक रूप से यह अर्थ है कि परमेश्वर विशिष्ट और अलग है। अतः परमेश्वर की पवित्रता इस बात पर बल देना है कि परमेश्वर ईश्वरीय है और कि सब विशेषताएँ और गुण जिन्हें हम परमेश्वर के साथ जोड़ते हैं, मनुष्यों से अलग हैं। और इसलिए अनुरूपता में जब हम लोगों की पवित्रता के विषय में बात करते हैं तो हम ऐसे लोगों के बारे में बात करते हैं जो उस परमेश्वर के समान बनने के लिए जिसकी वे सेवा करते हैं, अपने पापी स्वभाव से अलग हो जाते हैं।

— डॉ. साइमन विबर्ट

पवित्रशास्त्र शब्द "पवित्रीकरण" का प्रयोग अलग-अलग रूपों में करता है। और फलस्वरूप, धर्मविज्ञानी पवित्रीकरण के कई प्रकारों और पहलुओं को देखते हैं। मन-परिवर्तन के समय पवित्र आत्मा जिस पवित्रीकरण को हम पर लागू करता है उसे कभी-कभी "स्थाई पवित्रीकरण" कहा जाता है क्योंकि यह एक निरंतर चलनेवाली प्रक्रिया होने की अपेक्षा एक समय की घटना है। हमारे मन-परिवर्तन के समय पवित्र आत्मा हमें मसीह के साथ जोड़ने के द्वारा अलग और शुद्ध करता है। और क्योंकि यीशु स्वयं सिद्ध रूप से पवित्र — सिद्ध रूप से शुद्ध और निष्पाप — है, इसलिए हम भी पवित्र हो जाते हैं। सुनिए यीशु ने यूहन्ना 17:19 में क्या कहा :

> और उनके लिये मैं अपने आप को पवित्र करता हूँ, ताकि वे भी सत्य के द्वारा पवित्र किये जाएँ (यूहन्ना 17:19)।

यीशु का पवित्रीकरण हमारे पवित्रीकरण के लिए आवश्यक है क्योंकि हमारा पवित्रीकरण उसके पवित्रीकरण से निकलता है। और 1 कुरिन्थियों 1:30 में पौलुस ने यह लिखा :

> मसीह यीशु... हमारे लिये... पवित्रता [ठहरा] (1 कुरिन्थियों 1:30)।

1 कुरिन्थियों 6:11, और इब्रानियों 10:10 सहित नए नियम के और भी कई अनुच्छेद भी इस विचार को संबोधित करते हैं।

स्थाई पवित्रीकरण के द्वारा हमारा प्रभु यीशु इस समय हमारे आत्मिक जीवन और सामर्थ्य का स्रोत बन जाता है, और बाद में सामान्य पुनरुत्थान में हमारे भौतिक जीवन का। हम पवित्रशास्त्र में इसे कई रूपों में देखते हैं। उदाहरण के लिए यूहन्ना 15:1-5 में यीशु ने स्वयं की तुलना दाखलता से और विश्वासियों की तुलना दाखलता की डालियों से की। और उसका तर्क यह था कि हमारी आत्मिक एकता के कारण उसका जीवन हमारे जीवनों के द्वारा बहता है। 1 कुरिन्थियों 6:15-17 में पौलुस ने कहा कि हमारी देहें स्वयं मसीह का भाग हैं, और कि हम आत्मा में भी उसके साथ एक हैं। और हम इसी विचार को मानवीय देह के रूपक में पाते हैं जिसका प्रयोग पौलुस ने इफिसियों 4:15, 16 जैसे स्थानों में किया जहाँ उसने कहा कि मसीह सिर है और विश्वासी उसकी देह हैं।

पवित्रीकरण के ये जैविक पहलू उसे बदल देते हैं जो हम करते हैं, जैसा हम सोचते और महसूस करते हैं, जो हम चाहते हैं, और जिसे हम पसंद करते हैं। वे हमें नया जीवन, नई स्वतंत्रताएँ और नई योग्यताएँ प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, वे हमें उस पाप का विरोध करने में योग्य बनाने के द्वारा पाप की गुलामी से बचाते हैं, जो हमेशा अविश्वासियों को दबाता रहता है।

रोमियों 6–8 में पौलुस ने व्यापक रूप से नए जीवन के बारे में बात की जिसे हम विश्वास में आने के समय प्राप्त करते हैं। उसने कहा कि हम पाप के प्रति और हमारे ऊपर पाप के अधिकार के प्रति मर गए हैं। और फलस्वरूप, हमें पाप का विरोध करने और परमेश्वर की आज्ञा मानने की योग्यताएँ प्राप्त होती हैं। सुनिए कैसे उसने रोमियों 7:5-6 में इस परिवर्तन का वर्णन किया :

> जब हम शारीरिक थे, तो पापों की अभिलाषाएँ जो व्यवस्था के द्वारा थीं, मृत्यु का फल उत्पन्न करने के लिये हमारे अंगों में काम करती थीं। परन्तु [अब] जिस के बन्धन में हम थे उसके लिये मर कर... आत्मा की नई रीति पर सेवा करते हैं (रोमियों 7:5-6)।

और रोमियों 8:9 में उसने यह जोड़ा :

> तुम शारीरिक दशा में नहीं परन्तु आत्मिक दशा में हो, यदि [तुम] में मसीह का आत्मा [है] तो (रोमियों 8:9)।

स्थाई पवित्रीकरण में पवित्र आत्मा हमें ऐसे रूपों में नया बनाता है कि पाप विजयी नहीं हो सकता, ताकि हम अधिक से अधिक मसीह के समान बनने के लिए स्वतंत्र हों।

हम ऐसे बहुत से लोगों को जानते हैं जो एक नई शुरुआत से लाभ प्राप्त कर सकते हैं। कई बार हमने किसी रिश्ते को बड़े गलत तरीके से निभाया होगा। या हमारी नौकरी में हमने कई गलतियाँ की होंगी। या हम कानून के संबंध में किसी समस्या में पड़ गए होंगे। अविश्वासियों का परमेश्वर के साथ उनके संबंध में भी कुछ ऐसा ही होता है। जब हम इस संसार में प्रवेश करते हैं, तभी से हम पाप के द्वारा भ्रष्ट और परमेश्वर के द्वारा दोषी ठहराए हुए होते हैं। परंतु मन-परिवर्तन हमें एक नई शुरुआत प्रदान करता है। यह वह महत्वपूर्ण समय है जब पवित्र आत्मा हमें नया जीवन, हमारे पाप पर एक नया टूटापन, परमेश्वर के सामने एक नया आधार, और आनंद के साथ उसकी आज्ञा मानने के लिए एक नया मन प्रदान करता है। और यह हरेक विश्वासी की जिम्मेदारी है कि वह इस नई शुरुआत के लिए धन्यावादी हो, और ऐसे रूपों में जीवन जीए जो नए जीवन और उस बुलाहट से मेल खाते हों जिसमें हम बुलाए गए हैं।

हमारे मन-परिवर्तन में पवित्र आत्मा के कार्य का अध्ययन कर लेने के बाद, आइए अब हम हमारे व्यक्तिगत मसीही जीवन में उसकी निरंतर चलनेवाली भूमिका की ओर मुड़ें।

मसीही जीवन

जैसा कि हमने अभी देखा है, विश्वासियों के जीवन में पवित्र आत्मा के कार्य के बहुत से पहलू हैं जो वह तभी करता है जब हम पहले उद्धार पा लेते हैं। और उन्हें फिर दोहराने की जरूरत नहीं होती। उसे हमारी आत्माओं को केवल एक बार नया बनाने की आवश्यकता होती है। यद्यपि वह नियमित रूप से विश्वासियों को पाप का बोध कराता है, फिर भी वह केवल हमारे मन-परिवर्तन के दौरान ही इसे एक ऐसे रूप में करता है जो हमें मसीह को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करने के लिए प्रेरित करता है। वह हम पर केवल एक बार धार्मिकता को लागू करता है, और जब हम धर्मी ठहर जाते हैं तो हम कभी अपने धर्मी स्तर को नहीं खोते हैं। और यही बात हम स्थाई पवित्रीकरण में अपने नए जीवन के विषय में कह सकते हैं। परंतु आत्मा के कार्य के कई अन्य पहलू विश्वासियों के रूप में हमारे जीवनों में निरंतर चलते रहते हैं।

इस अध्याय में हम अपने निरंतर चलनेवाले उद्धार या पवित्र आत्मा पर निर्भर मसीही जीवन के चार पहलुओं का उल्लेख करेंगे। पहला, हम आत्मा के हमारे भीतर वास करने का उल्लेख करेंगे। दूसरा, उसके पवित्रीकरण के कार्य के निरंतर चलनेवाले पहलुओं के बारे में बात करेंगे। तीसरा, हम यह देखेंगे कि वह हमारे लिए मध्यस्थता करने के द्वारा कार्य करता है। और चौथा, हम इस बात पर ध्यान केंद्रित करेंगे कि हमारे अंतिम उद्धार को सुरक्षित करने के लिए वह हमें बनाए रखता है। आइए सबसे पहले उसकी हम में वास करनेवाली उपस्थिति को देखें।

वास करना

पवित्र आत्मा के वास करने को उसकी “विश्वासियों के भीतर विशेष उपस्थिति, और उनके साथ उसकी आत्मिक एकता” के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। जैसे कि परमेश्वर पवित्र आत्मा सर्वव्यापी है — वह एक ही समय में पूरी सृष्टि में हर जगह विद्यमान है। परंतु वह सब स्थानों और समयों

में एक ही तरह से अपनी उपस्थिति को प्रकट नहीं करता है। और विश्वासियों में उसका वास करना सबसे अधिक व्यक्तिगत, घनिष्ठ और सामर्थी रूप में होता है जिसमें वह अपनी उपस्थिति को प्रकट करता है।

उद्धार के विषय में एक सबसे अद्भुत सच्चाई यह है कि स्वयं परमेश्वर हमारे भीतर वास करता है। एक बार जब आत्मा हमें मन-परिवर्तन के समय पवित्र ठहरा देता है, तो हम उसकी उपस्थिति के योग्य पात्र बन जाते हैं। और क्योंकि वह हमसे बहुत अधिक प्रेम करता है, और क्योंकि वह हमारे हृदयों और मनों को बेहतरी हेतु प्रभावित करने के लिए दृढ़ संकल्पी है, इसलिए वह हमारे भीतर वास करता है और कभी हमें छोड़ता नहीं है।

जब पवित्र आत्मा हमें नया जन्म प्रदान करता है तो वह हमारी आत्माओं में केवल सुधार करके हमें अपनी ही योजनाओं पर छोड़ नहीं देता है। बल्कि वह हमारे भीतर वास करना शुरू कर देता है। हम इसे 1 कुरिन्थियों 6:19, 2 तीमुथियुस 1:14, और याकूब 4:5 जैसे स्थानों में देखते हैं। और यह उसकी वास करनेवाली उपस्थिति ही है जो वास्तव में हमारी आत्माओं को जीवन देती है। सुनिए पौलुस ने रोमियों 8:9-11 में क्या कहा :

> यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं तो वह उसका जन नहीं। यदि मसीह तुम में है, तो देह पाप के कारण मरी हुई है; परन्तु आत्मा धर्म के कारण जीवित है। यदि उसी का आत्मा जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया, तुम में बसा हुआ है; तो जिसने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया, वह तुम्हारी नश्वर देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है, जिलाएगा (रोमियों 8:9-11)।

यहाँ पौलुस ने दर्शाया कि मसीह अपने पवित्र आत्मा के द्वारा हम में वास करता है। और यह पवित्र आत्मा की वास करनेवाली उपस्थिति ही है जो हमें अब आत्मिक जीवन देती है, और भविष्य में हमें भौतिक पुनरुत्थान प्रदान करेगी।

पवित्रशास्त्र पवित्र आत्मा की एक ऐसी सेवकाई के बारे में भी बात करता है जो उसके वास करने से गहराई से संबंधित है, जिसे नया नियम पवित्र आत्मा से भरना कहता है। कलीसिया के विभिन्न संप्रदाय आत्मा के भरने को विभिन्न तरीकों से समझते हैं। परंतु हम सब कम से कम दो बातों पर सहमत हो सकते हैं। पहली, पवित्र आत्मा हमेशा सच्चे विश्वासियों में वास करता है। और दूसरा, उसका भरना, या हमारे जीवनों में उसके प्रभाव का स्तर अलग-अलग होता है। समय-समय पर वह हमें भरता है और हमें अन्य समयों से अधिक सामर्थी रूप में प्रभावित करता है। इसी कारण पवित्रशास्त्र हमें कभी परमेश्वर के आत्मा को अपने भीतर वास कराने की आज्ञा नहीं देता, परंतु वह हमें पवित्र आत्मा से भरने की आज्ञा अवश्य देता है। जैसे कि प्रेरित पौलुस ने इफिसियों 5:18 में लिखा :

> दाखरस से मतवाले न बनो, क्योंकि इससे लुचपन होता है, पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ (इफिसियों 5:18)।

जब पवित्र आत्मा हमें भरता है तो वह हम पर बहुत अधिक, और कभी-कभी अद्भुत प्रभाव डालता है। हमारे हृदय साथी मसीहियों के लिए आनंद, धन्यवाद और प्रेम से उमड़ने लगते हैं। या जैसे कि पौलुस गलातियों 5:22, 23 में कहता है, हम एक बड़े स्तर पर आत्मा के फल को देखते हैं।

पवित्र आत्मा से भरने और उसके वास करने के द्वारा विश्वासियों को ऐसे कार्य करने की सामर्थ्य मिलती है जिन्हें परमेश्वर प्रमाणित करता है, जैसा कि पौलुस रोमियों 8:5-9 में सिखाता है। हम सच्चे समर्पण के साथ और बड़ी गंभीरता और ईमानदारी से उससे प्रार्थना करने के द्वारा उसके पास आकर सच्चाई से आराधना करने में भी सक्षम हो जाते हैं। जैसा कि यीशु ने यूहन्ना 4:24 में कहा :

> परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसकी आराधना करनेवाले आत्मा और सच्चाई से आराधना करें (यूहन्ना 4:24)।

जैसा कि पौलुस ने फिलिप्पियों 3:3 में लिखा :

> हम ही हैं जो परमेश्वर के आत्मा की अगुआई से उपासना करते हैं (फिलिप्पियों 3:3)।

अविश्वासी निश्चित रूप से केवल भौतिक रूप से परमेश्वर की आराधना करने में सक्षम हैं। वे प्रार्थनाएँ कर सकते हैं, भेंट ला सकते हैं, गीत गा सकते हैं, प्रचार कर सकते हैं और सिखा सकते हैं। परंतु वे ये कार्य उन रूपों में नहीं कर सकते जिन्हें परमेश्वर ग्रहण करता है। उनकी कपटता, उनके पाप, उनकी आत्मिक रूप से मरी हुई अवस्था के कारण उनकी आराधना परमेश्वर को नहीं भाती। परंतु अपने भीतर वास करनेवाले आत्मा के कारण विश्वासी आत्मा की आंतरिक अगुवाई और प्रेरणा के द्वारा उसके पास आ सकते हैं, और वह भी ऐसे रूपों में जो परमेश्वर के व्यक्तित्वों, कार्यों और गुणों को सही रूप से स्वीकार करते हों।

अब हमें यह दर्शाना चाहिए कि मसीही कई बार इस भ्रांतिपूर्ण विचार को रखते हैं कि पवित्र आत्मा ने विश्वासियों में केवल नए नियम में वास करना शुरू किया। परंतु सच्चाई यह है कि पुराने नियम के विश्वासियों को भी निश्चित रूप से नया जन्म प्राप्त था। और वह केवल तभी सच हो सकता है जब पवित्र आत्मा ने उनमें भी वास किया हो। और बहुत सी अन्य बातें जो पुराने नियम के विश्वासियों में पाई जाती थीं, वे भी पवित्र आत्मा के वास करने पर ही निर्भर थीं। उनमें विश्वास था। उन्होंने परमेश्वर के ग्रहणयोग्य कार्य किए। उन्होंने सही तरीके से आराधना की। और उनके जीवनों में आत्मा का फल था। निश्चित रूप से पवित्र आत्मा की सेवकाई के ऐसे पहलू हैं जो नए नियम में और अधिक गहनता से पाए जाते हैं। परंतु विश्वासियों में वास करना हर युग में उसके कार्य का भाग रहा है।

इसके अतिरिक्त, पवित्र आत्मा के वास करने की उपस्थिति विश्वासियों को परमेश्वर के प्रकाशन की अंतर्दृष्टि भी प्रदान करती है। जैसे कि 1 कुरिन्थियों 2:12-16 में पौलुस ने यह लिखा :

> हम ने... वह आत्मा पाया है जो परमेश्वर की ओर से है कि हम उन बातों को जानें जो परमेश्वर ने हमें दी हैं... शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि... वह उन्हें जान [नहीं] सकता है... परन्तु हम में मसीह का मन है (1 कुरिन्थियों 2:12-16)।

जैसे कि हमने पहले के एक अध्याय में चर्चा की की थी, धर्मविज्ञानी अक्सर दो तरह की आत्मिक अंतर्दृष्टि को पहचानते हैं जो पवित्र आत्मा से जुड़ी होती हैं। "प्रज्वलन" ज्ञान या समझ का ईश्वरीय वरदान है जो प्राथमिक रूप से बौद्धिक है।

और "आंतरिक अगुवाई" ज्ञान और समझ का ऐसा ईश्वरीय वरदान है जो प्राथमिक रूप से भावनात्मक या अंतर्ज्ञानी है।

दोनों ही विषयों में यह पवित्र आत्मा का वास करना ही है जो परमेश्वर के प्रकाशन और हमारे प्रति उसके अभिप्रायों में हमें यह अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

> पवित्र आत्मा विश्वासियों को एक स्रोत, उनके जीवनों में परमश्वर की सामर्थ्य के रूप में, उनके जीवनों में "परमेश्वर के मन" के रूप में, उनके जीवनों में परमेश्वर की उपस्थिति के रूप में दिया गया है, क्योंकि निस्संदेह पवित्र आत्मा परमेश्वर है... यीशु ने यूहन्ना के सुसमाचार के अंत में कहा कि जब आत्मा आएगा तो वह संसार को पाप और धार्मिकता का बोध कराएगा और प्रेरितों की, तथा साथ ही साथ

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

> विश्वासियों की संपूर्ण सत्य में अगुवाई करेगा। अतः आत्मा हमारे जीवन में परमेश्वर की ओर से एक साथी के रूप में कार्य करता है कि वह हमारी अगुवाई करे। और इसलिए हम सब ऐसे समयों का अनुभव करते हैं जब हम महसूस करते हैं कि आत्मा... कि परमेश्वर हमसे बात कर रहा है, कि परमेश्वर हमसे यह या वह करने, अथवा यह या वह न करने को कह रहा है। और वह एक सच्चा संबंध है, एक व्यक्तिगत वास्तविक संबंध जो परमेश्वर विश्वासी के साथ रखता है।
>
> — डॉ. एलन हल्टबर्ग

अब जबकि हमने अपने मसीही जीवन के संदर्भ में आत्मा की वास करने की उपस्थिति के बारे में बात कर ली है, तो आइए हम पवित्र ठहराने के उसके निरंतर चलनेवाले कार्य का अध्ययन करें।

पवित्र ठहराना

जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया, हम पवित्रीकरण के बारे में विभिन्न तरीकों में बात कर सकते हैं, जिसमें वह स्थाई पवित्रीकरण शामिल होता है जिसे हम मन-परिवर्तन के समय प्राप्त करते हैं। परंतु पवित्रीकरण का अन्य पहलू या प्रकार भी है, जिसका उल्लेख हम इस अध्याय में हमारे उद्देश्य के लिए "निरंतर चलनेवाले पवित्रीकरण" के रूप में करेंगे। हम इस प्रकार के पवित्रीकरण का अनुभव अपने पूरे जीवनभर करते हैं क्योंकि हमारे निरंतर चलेवाले पाप के लिए क्षमा और शुद्धता की आवश्यकता होती है।

प्रत्येक विश्वासी पाप करता है। वास्तव में, हम हर दिन पाप करते हैं। यदि आप सोचते हैं कि आप पाप नहीं करते तो आपने इस विषय में गहराई से नहीं सोचा है कि परमेश्वर विश्वास करने, कहने, करने, और यहाँ तक कि होने के विषय में हमसे क्या अपेक्षा करता है। परंतु अच्छी खबर यह है कि जब भी हम पाप करते हैं, पवित्र आत्मा हम पर क्षमा को लागू करने, और पाप की अधार्मिकता के प्रभावों से हमें शुद्ध करने के लिए तैयार हो जाता है। इसका अर्थ यह नहीं कि हम फिर पाप नहीं करेंगे, या फिर हम अपने पाप के भौतिक परिणामों से बच जाएँगे। परंतु इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर हमसे प्रेम रखना जारी रखता है, और उद्धार के उस कार्य को जारी रखता है जो उसने तब शुरू किया जब उसने हमें पहले-पहल नया जन्म दिया था।

जब पवित्र आत्मा हमें नया जन्म प्रदान करता है तो वह पाप की भ्रष्टता और उसके प्रभाव को हमारे जीवनों से पूरी तरह से नहीं हटाता है। जैसा कि पौलुस ने रोमियों 7:14-25 में समझाया, हमारे भीतर का पाप अब भी हम में वास करनेवाले आत्मा से लड़ाई करता रहता है। पवित्रशास्त्र रोमियों 7:23, गलातियों 5:17, और 1 पतरस 2:11 में इस संघर्ष का वर्णन युद्ध के रूप में करता है। परंतु अच्छी खबर यह है कि पवित्र आत्मा हम में वास करता है और हम में कार्य करता है। अतः यद्यपि हम पाप के प्रभाव के कारण ठोकर खाना जारी रखते हैं, फिर भी हम आत्मा के प्रभाव के कारण अच्छे कार्य भी करते हैं। जैसा कि पौलुस ने फिलिप्पियों 2:13 में लिखा :

> परमेश्वर ही है जिसने अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है (फिलिप्पियों 2:13)।

> परमेश्वर ने हमें पवित्र आत्मा में आज्ञाकारिता के हमारे अनुसरण के "क्यों" और "कैसे" प्रश्न का उत्तर दिया है। "क्या" प्रश्न — परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए हम क्या करें?" — का उत्तर बाइबल के पुराने और नए नियम की आज्ञाओं के द्वारा दिया जाता है। परंतु हम "क्यों?" प्रश्न से संघर्ष करते हैं। मैं ऐसा क्यों करूँ? मुझे परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए कौन प्रेरित करेगा? और पौलुस कहता है

> कि यह आत्मा ही है जो अनुग्रह पर मनन करने के लिए मुझे प्रेरित करता है, मुझे मसीह के प्रेम की ओर आकर्षित करता हैं, और यह पवित्र आत्मा ही है जो मुझे यह चाहत देता है। परंतु जब मैं ऐसी रीति से कार्य करना चाहता हूँ जिससे परमेश्वर प्रसन्न हो, फिर भी मैं इस अन्य प्रश्न का सामना करता हूँ, "मैं यह कैसे कर सकता हूँ?" क्योंकि मुझे अपने भीतर निर्बलता ही दिखाई देती है। पौलुस रोमियों 7 में इस पर गहराई से विचार करता है और ऐसे व्यक्ति के असमंजस, निराशा का वर्णन करता है जो जानता है कि परमेश्वर की व्यवस्था सच्ची है, जो सहमत होता है कि यह भली है, परंतु अपने भीतर किसी और बात को कार्य करता हुआ पाता है और निराश हो जाता है... वह उस कार्य को करने में असफल रहता है जिसके लिए परमेश्वर ने उसे बुलाया है, और जो वह करना चाहता है। रोमियों 8 में पौलुस उसका उत्तर देता है कि यद्यपि व्यवस्था निर्बल थी, वह केवल आज्ञाएँ दे सकी, परंतु हमारे हृदयों को बदल नहीं सकी, फिर भी परमेश्वर ने पवित्र आत्मा के द्वारा अब हमें स्वतंत्र कर दिया है, और जब हम आत्मा में चलते हैं, तो हम मसीह की मृत्यु के द्वारा और आत्मा की सामर्थ्य के द्वारा आज्ञा मान सकते हैं। व्यवस्था की धर्मी अपेक्षा हम में पूरी हो रही है क्योंकि हम शरीर, अर्थात् हमारे अपने असहाय मानवीय स्वभाव, के अनुसार नहीं चलते, बल्कि आत्मा की सामर्थ्य में चलते हैं। पौलुस फिलिप्पियों 2 के उस छोटे वाक्यांश में इसी का सार प्रस्तुत करता है। वह "अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम' का प्रभाव डालता है।
>
> — डॉ. डेनिस ई. जॉनसन

निरंतर चलनेवाला पवित्रीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा पवित्र आत्मा निरंतर हम पर क्षमा और शुद्धता को लागू करता है जब हम पाप करते हैं, और निरंतर रूप से हमें पाप से दूर ले जाकर धार्मिकता की ओर मोड़ता है। एक आदर्श के रूप में, इस प्रक्रिया के द्वारा हमें समय के साथ-साथ परमेश्वर के प्रति अधिक से अधिक आज्ञाकारी बनना चाहिए। पवित्रशास्त्र इफिसियों 4:13, कुलुसियों 4:12, इब्रानियों 5:14, और अन्य कई स्थानों पर इस जीवनपर्यंत के सुधार का वर्णन "परिपक्वता" के रूप में करता है। केवल एक उदाहरण के रूप में, याकूब 1:4 में हम यह पढ़ते हैं :

> धीरज को अपना पूरा काम करने दो कि तुम [परिपक्व] और सिद्ध हो जाओ (याकूब 1:4)।

पवित्र आत्मा के प्रभाव के द्वारा, परिपक्व होने की यह प्रक्रिया विश्वासियों के जीवन में आत्मिक परिणामों को उत्पन्न करती है।

पूरे पवित्रशास्त्र में फल के रूपक का प्रयोग अक्सर इन परिणामों का वर्णन करने के लिए किया जाता है। हम इसे 3:8-10 में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के द्वारा फरीसियों और सदूकियों को दोषी ठहराने में देखते हैं। हम इसे मत्ती 7:16-20 में पहाड़ी संदेश में सच्ची और झूठी आज्ञाकारिता के विषय में यीशु की शिक्षाओं में पाते हैं। यह यूहन्ना 15:1-16 में भले कार्यों के विषय में यीशु की शिक्षाओं का मुख्य विषय है। और जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया था, गलातियों 5 में पौलुस ने उस विशेष फल का वर्णन किया जिसे आत्मा उनके जीवनों में प्रकट करता है जिनमें वह वास करता है। सुनिए पौलुस ने गलातियों 5:17-25 में क्या लिखा :

> शरीर आत्मा के विरोध में और आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करता है... आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और

> संयम है... जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उसकी लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है। यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो आत्मा के अनुसार चलें भी (गलातियों 5:17-25)।

गलातियों 5 में पौलुस की आत्मा के फल की चर्चा रोमियों 6-8 में उसकी शिक्षाओं से मिलती-जुलती है। दोनों स्थानों पर उसने उन विभिन्न प्रभावों के बीच अंतर स्पष्ट किया जो आत्मा और पाप हमारी अभिलाषाओं पर डालते हैं। और उसने स्पष्ट किया कि हृदय से परमेश्वर की आज्ञा मानने, और धर्मी गुणों को प्रकट करने का एकमात्र तरीका यही है कि पवित्र आत्मा हमारे मनों में वास करे।

कुछ मसीही ग़लतफ़हमी में आत्मा के फल की तुलना आत्मिक वरदानों से करते हैं। जैसा कि हमने पिछले अध्याय में देखा, पवित्र आत्मा नए नियम में प्रत्येक विश्वासी को अलग-अलग वरदान देता है। परंतु आत्मा का फल वह आज्ञाकारी जीवन है जो आत्मा सब विश्वासियों में उत्पन्न करता है। इसलिए यह हम सबके जीवनों में लगभग समान होना चाहिए।

अब जब हम विश्वासियों में आत्मा के पवित्रीकरण के निरंतर चलनेवाले कार्य के विषय में विचार करते हैं, तो हमें उल्लेख करना चाहिए कि कुछ धर्मवैज्ञानिक परंपराएँ इसका वर्णन "प्रगतिशील पवित्रीकरण" के रूप में करती हैं। यह शब्द इस विचार को दर्शाता है कि हम पवित्रता की ओर प्रगति करते हैं, और अपने मसीही जीवनों में अधिक से अधिक भक्तिपूर्ण हो जाते हैं। यह निश्चित रूप से सच है कि मसीहियों को प्रगतिशील रूप में और अधिक आत्मिक रूप से परिपक्व हो *जाना चाहिए,* और हमें अधिक से अधिक फल उत्पन्न करना चाहिए। परंतु यहाँ तक कि सच्चे विश्वासी भी इस रीति से बढ़ने में विफल हो जाते हैं। सुनिए किस प्रकार पतरस ने 2 पतरस 1:5-9 में पवित्रीकरण के इन पहलुओं का वर्णन किया :

> तुम सब प्रकार का यत्न करके अपने विश्वास पर सद्‌गुण, और सद्‌गुण पर समझ, और समझ पर संयम, और संयम पर धीरज, और धीरज पर भक्ति, और भक्ति पर भाईचारे की प्रीति और भाईचारे की प्रीति पर प्रेम बढ़ाते जाओ। क्योंकि यदि ये बातें तुम में वर्तमान रहें और बढ़ती जाएँ, तो तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह की पहचान में निकम्मे और निष्फल न होने देगी। क्योंकि जिसमें ये बातें नहीं, वह... अपने पिछले पापों से धुलकर शुद्ध होने को भूल बैठा है (2 पतरस 1:5-9)।

पवित्र गुणों की पतरस की सूची आत्मा के फल की पौलुस की सूची से बहुत मिलती-जुलती है। और उसने यह कहा कि ये गुण हमारे जीवनों में बढ़ते जाने चाहिए। दूसरे शब्दों में, वे प्रगतिशील *होने चाहिए।* परंतु उसने यह भी माना कि विश्वासियों में अपनी ही गलती से इस फल की घटी हो सकती है।

> बाइबल हमें बताती है कि पवित्र आत्मा अपने सद्‌भाव की इच्छा और उसके कार्य को उत्पन्न करता है, परंतु हम पवित्रशास्त्र के अन्य भागों में यह भी पढ़ते हैं कि हमें अपना पूरा यत्न करने की आज्ञा दी गई है। हमें अपने पवित्रीकरण के प्रति सच्चे बने रहने की आज्ञा दी है, इसलिए हम यह देख सकते हैं कि पवित्र आत्मा हम में इच्छा को उत्पन्न करता है और साथ ही उस कार्य को करने की योग्यता उत्पन्न करता है जो परमेश्वर चाहता है। फिर भी, विश्वासी को प्रयास करते हुए, अनुग्रह का इस्तेमाल करते हुए, परीक्षा का सामना करने के लिए सचेत और चौकन्ने रहते हुए प्रत्युत्तर देना चाहिए ताकि हम प्रभु के अनुग्रह में बढ़ सकें।
>
> — डॉ. डेविड कोरेआ, डी.मिन. अनुवाद

हमारे मसीही जीवन में पवित्र आत्मा की हम में वास करनेवाली उपस्थिति और हमारे निरंतर चलनेवाले पवित्रीकरण के संबंध में उसकी भूमिका के बारे में बात करने के बाद, आइए हमारे लिए उसकी मध्यस्थता का संक्षिप्त रूप से उल्लेख करें।

मध्यस्थता करना

मध्यस्थता “विश्वासियों के लिए पिता से विनती करने का” पवित्र आत्मा का कार्य है। यह उससे मिलता-जुलता है जो मनुष्य तब करते हैं जब हम किसी ऐसे व्यक्ति का बचाव करते हैं जिसे धमकी दी जा रही होती है या हानि पहुँचाई जा रही होती है। रोमियों 8:26-27 में आत्मा की मध्यस्थता के विषय में पौलुस के वर्णन को सुनें :

> आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है : क्योंकि हम नहीं जानते कि प्रार्थना किस रीति से करना चाहिए, परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर, जो बयान से बाहर हैं, हमारे लिये विनती करता है; और मनों का जाँचनेवाला जानता है कि आत्मा की मनसा क्या है? क्योंकि वह पवित्र लोगों के लिये परमेश्वर की इच्छा के अनुसार विनती करता है (रोमियों 8:26-27)।

कभी-कभी जब पवित्रशास्त्र बात करता है कि परमेश्वर हमारे मनों को जानता है, तो इसमें दंड की चेतावनी भी पाई जाती है। हम इसे यिर्मयाह 4:14, 1 कुरिन्थियों 4:5, और इब्रानियों 4:12 जैसे स्थानों में देखते हैं। परंतु *विश्वासियों* के विषय में कहें तो, मसीह ने हमारे दंड को दूर कर दिया है। अतः जब आत्मा *हमारे* मनों को जाँचता है, तो यह हमेशा हमारे लाभ के लिए होता है। वह उन जरूरतों को देखता है जिसे हम व्यक्त नहीं कर सकते, और उन्हें हमारे लिए व्यक्त करता है। वह उस पाप को देखता है जिसे हम पहचान भी नहीं सकते, और हमारे लिए क्षमा की विनती करता है। वह हमारे लिए ठीक वैसे ही प्रार्थना करता है जैसे हमें करनी चाहिए, पर हम नहीं करते। और यह मध्यस्थता हमेशा सफल रहती है। क्यों? क्योंकि, जैसे कि पौलुस ने कहा, आत्मा हमेशा परमेश्वर की इच्छा के अनुसार मध्यस्थता करता है। और उसमें हम यह जोड़ सकते हैं कि पिता हमेशा पवित्र आत्मा की विनतियों का सम्मान करता है क्योंकि पवित्र आत्मा स्वयं परमेश्वर है।

अब इसका अर्थ यह नहीं कि हमारे जीवन पाप, पीड़ा और कठिनाइयों से मुक्त हैं। आखिरकार, आत्मा जानता है कि क्यों पिता ने हमारे जीवन में इन बातों के होने की योजना बनाई, और वह उस योजना को निरस्त करने की मध्यस्थता नहीं करेगा। परंतु आत्मा यह भी जानता है, जैसे कि पौलुस ने रोमियों 8:28-30 में कुछ ही पंक्तियों के बाद स्पष्ट किया, कि परमेश्वर हमारे जीवन की सब बुरी बातों का प्रयोग हमारी भलाई के लिए कर रहा है। वह हमारे पवित्रीकरण को पूरा करने के लिए, और हमें मसीह में एक अद्‌भुत, अनंत मीरास प्रदान करने के लिए उसका प्रयोग कर रहा है।

प्रार्थना एक महत्वपूर्ण बात है, है न? इस ब्रह्मांड का सृष्टिकर्ता, सिद्ध और पवित्र सर्वशक्तिमान परमेश्वर हमारी बात सुनता है, और हमारे जीवनों में हस्तक्षेप करने के द्वारा हमें प्रत्युत्तर भी देता है। और वह ऐसे इसलिए नहीं करता कि वह ऐसा करने के लिए बाध्य है, पर इसलिए कि वह ऐसा करना चाहता है। उसे हमारे मुख से निकली स्तुति और धन्यवाद को सुनना पसंद है। वह उदारता के साथ हमें क्षमा करता है जब हम अपने पापों को मान लेते हैं। और वह लगाव और बुद्धि के साथ हमारी विनातियों का उत्तर देता है। परंतु प्रत्येक विश्वासी ने ऐसे समयों का अनुभव किया है जब हमारे मन और दिमाग इतने भरे रहते हैं कि हम प्रार्थना में स्वयं को अच्छी तरह से अभिव्यक्त नहीं कर सकते। प्रत्येक विश्वासी ने ऐसे समयों का अनुभव किया है जब हमारे मन और दिमाग इतने हठीले होते हैं कि हम वैसे प्रार्थना करने से इनकार कर देते हैं जैसे हमें करनी चाहिए। और प्रत्येक विश्वासी ने ऐसे समयों का अनुभव किया है जब अपने अवर्णनीय परमेश्वर और उसके अगम्य मार्गों के विषय में हमारी अज्ञानता हमें उसके पास उस रीति

में जाने से रोकती है जिसके वह योग्य है। इसलिए क्या यह जानना राहत की बात नहीं है कि चाहे हम बहुत अच्छी अवस्था में हों या बहुत बुरी, फिर भी पवित्र आत्मा स्वयं हमारे लिए प्रार्थना करता है?

अब तक हमने पवित्र आत्मा की हम में वास करनेवाली उपस्थिति, निरंतर चलनेवाले पवित्रीकरण के उसके कार्य, और हमारे लिए उसकी मध्यस्थता को देखने के द्वारा मसीही जीवन का अध्ययन किया है। आइए अब हम अपने अंतिम उद्धार के लिए विश्वासियों को बनाए रखने के उसके कार्य की ओर अपना ध्यान लगाएँ।

बनाए रखना

बनाए रखना पवित्र आत्मा का "इस बात को सुनिश्चित करने का निरंतर, और अनुग्रहकारी कार्य है कि विश्वासी तब तक विश्वास में बने रहें जब तक हमारा उद्धार पूरा नहीं हो जाता।" पवित्र आत्मा का बनाए रखने का कार्य उसकी वास करने की उपस्थिति से निकलता है ताकि हमारे मन परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहें। इसका अर्थ यह नहीं कि हम कभी संदेह या पाप नहीं करते। परंतु इसका अर्थ यह जरूर है कि हमारा उद्धार सुरक्षित है, क्योंकि आत्मा हमारे भीतर उद्धार देनेवाले विश्वास को बनाए रखता है। सुनिए पौलुस ने रोमियों 8:11-14 में क्या कहा :

> यदि उसी का आत्मा जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया, तुम में बसा हुआ है; तो जिसने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया, वह तुम्हारी नश्वर देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है, जिलाएगा... यदि [तुम] आत्मा से देह की क्रियाओं को मारोगे तो जीवित रहोगे। इसलिये कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं (रोमियों 8:11-14)।

पौलुस ने सिखाया कि यदि पवित्र आत्मा ने हमें नया जन्म दिया है और वह हमारे भीतर वास करता है, तो वह हमारा मार्गदर्शन भी करता है। और यदि वह हमारा मार्गदर्शन करता है, तो हम स्थाई रूप से परमेश्वर के पुत्र हैं, और वह अंततः हमारी देहों को महिमा में फिर से जिलाएगा।

जब हम मसीह पर विश्वास करते हैं तो हमारा उद्धार सुरक्षित हो जाता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर ने हमें अपनी इच्छा के अनुसार जो चाहे करने पर भी बचाने की प्रतिज्ञा की है। बल्कि यह इसलिए है कि पवित्र आत्मा हमें बनाए रखता है। वह निश्चित करता है कि सच्चे विश्वासी सक्रिय रूप से विश्वास में बने रहते हैं, और कभी पूरी तरह से मसीह को नहीं त्यागते। जैसे कि पौलुस ने फिलिप्पियों 1:6 में लिखा :

> जिसने तुम में अच्छा काम आरम्भ किया है, वही उसे यीशु मसीह के दिन तक पूरा करेगा (फिलिप्पियों 1:6)।

हम जानते हैं कि आत्मा ने हमारे मन-परिवर्तन के समय हमारे उद्धार को शुरू किया। अतः हम में यह आश्वासन है कि वह तब तक हम पर उद्धार को लागू करना जारी रखेगा जब तक यीशु के पुनरागमन पर हमें महिमा मिलने का कार्य पूरा नहीं हो जाता। हम इसी विचार को गलातियों 3:1-5, 1 थिस्सलुनीकियों 5:23, 24, और 1 पतरस 1:3-5 जैसे स्थानों में देखते हैं।

> हमारे उद्धार का एक महत्वपूर्ण सत्य वह है जिसे हम "पवित्र जनों को बनाए रखना" कहते हैं — यद्यपि स्पर्जन ने इसका वर्णन "उद्धारकर्ता को बनाए रखना" कहना पसंद किया, और कि उद्धारकर्ता हमारे लिए बना रहा, और क्योंकि हम उसमें पाए जाते हैं, इसलिए हम उसमें सुरक्षित हैं। और मैं उससे बिलकुल असहमत नहीं हूँ। फिर भी, बनाए रखने का एक आत्मपरक पहलू भी है जिसमें

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

> परमेश्वर का आत्मा प्रवेश करता है और वास्तव में इस बात को आश्वस्त करने के लिए उसका प्रयोग करता है जिसे प्योरिटन (शुद्धतावादी) लोग "व्यावहारिक माध्यम" कहते हैं ताकि हम अपने अनुभव के विषय में बने रहें। इसलिए वह ऐसा कैसे करता है? ... वह यह कार्य हमारा मार्गदर्शन करने के लिए वचन का इस्तेमाल करते हुए हमेशा इस प्रेमपूर्ण, नम्र, शांतिपूर्ण रूप में करता है। और इसी कारण हम "वचन और आत्मा" की सुधारवादी परंपरा में बात करते हैं — वचन और आत्मा हमेशा एक सुंदर सामंजस्य में कार्य करते हैं ताकि हमें उस लक्ष्य तक पहुँचाए जो परमेश्वर ने हमारे उद्धार के लिए रखा है।
>
> — डॉ. डैनी अकीन

पवित्र आत्मा के बनाए रखने के कार्य के बारे में पवित्रशास्त्र के बात करने का एक और सामान्य तरीका कानूनी छाप की भाषा के द्वारा है। प्राचीन जगत में छाप अक्सर एक छल्ला या यंत्र था जिसे गीली मिट्टी या मोम में, या फिर किसी धातु में दबाया जाता था ताकि वह एक भौतिक छाप को छोड़े। वह छाप एक हस्ताक्षर के समान कार्य करती थी ताकि यह उस प्रलेख या वस्तु को प्रमाणिक या आधिकारिक बना दे जिस पर उसे लगाया जाता था। उदाहरण के लिए, मत्ती 27:66 उल्लेख करता है कि जब यीशु को गाड़ा गया तो रोमियों ने पत्थर पर एक छाप लगाई ताकि उन्हें पता चल सके कि किसी ने कब्र में जाकर यीशु की देह को छेड़ा तो नहीं है।

पवित्र आत्मा के संदर्भ में, वह परमेश्वर के स्वामित्व की छाप के रूप में कार्य करता है, और यह दर्शाता है कि जिनके पास परमेश्वर का आत्मा है वे सचमुच परमेश्वर के हैं। और कोई उन्हें परमेश्वर से छीन नहीं सकता। कुछ रूपों में, यह प्राचीन सेवकपन के कार्यों से मिलता-जुलता है। उदाहरण के तौर पर, निर्गमन 21:6 एक सेवक को जीवनभर सेवक बनाए रखने के लिए उसके कान को छेदने के कार्य का वर्णन करता है। इसी प्रकार, पवित्र आत्मा विश्वासियों पर परमेश्वर के स्वामित्व की छाप लगाता है। पौलुस 2 कुरिन्थियों 1:22 में इसे इस रीति से कहता है :

> [परमेश्वर] ने हम पर छाप भी कर दी है और बयाने में आत्मा को हमारे मनों में दिया (2 कुरिन्थियों 1:22)।

जब परमेश्वर पवित्र आत्मा से हम पर छाप लगाता है तो वह केवल अपनी निजी संपत्ति के रूप में हमें चिन्हित ही नहीं करता है। वह इस बात की *गारंटी* भी देता है कि जिस उद्धार का अनुभव करना हमने आरंभ कर दिया है, वह अंततः हमारे पास अपनी पूर्णता में आएगा। और प्राचीन सेवकपन की छापों और उसके चिह्नों के विपरीत, परमेश्वर की छाप हमें केवल *सेवकों* के रूप में ही चिन्हित नहीं करती है। यह हम पर उसकी संतान और उसके वारिसों के रूप में भी छाप लगाता है। सुनिए किस प्रकार पौलुस ने इफिसियों 1:13-14 में इन विचारों को समायोजित किया :

> और उसी में तुम पर भी... विश्वास [करने के द्वारा] प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी। वह उसके मोल लिये हुओं के छुटकारे के लिये हमारी मीरास का बयाना है (इफिसियों 1:13-14)।

जब हम पवित्र आत्मा को प्राप्त करते हैं, तो हम परमेश्वर की उस प्रतिज्ञा को प्राप्त करते हैं जो न केवल हमारे उद्धार की भावी पूर्णता की गारंटी देती है, बल्कि हमारी "मीरास" की भी। मीरास वह नहीं होती जो एक सेवक अपने स्वामी से प्राप्त करता है। यह वह है जो एक बच्चा अपने पिता से प्राप्त करता है।

और वह मीरास हमारा पूर्ण उद्धार होगी — अर्थात् हमारा महिमा प्राप्त करना, जो पवित्र आत्मा हमें तब देगा जब यीशु का पुनरागमन होगा। महिमा प्राप्त करने में हमारी देहों का एक अविनाशी, अनश्वर दशा में पुनरुत्थान शामिल होता है। जैसा कि हम देख चुके हैं, पौलुस ने रोमियों 8:11-14 में इस विषय में बात की है। परंतु उसने 1 कुरिन्थियों 15 में इसकी और अधिक विवरण के साथ व्याख्या की। उदाहरण के लिए, पद 37-44 में उसने हमारी वर्तमान देहों की तुलना बीजों से की। इसी प्रकार, उसने हमारी पुनरुत्थानित देहों की तुलना ऐसे पौधों से की जो उन बीजों से उग निकलते हैं। सुनिए पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 15:42-44 में क्या कहा :

> शरीर नाशवान् दशा में बोया जाता है और अविनाशी रूप में जी उठता है। वह अनादर के साथ बोया जाता है, और तेज के साथ जी उठता है; निर्बलता के साथ बोया जाता है, और सामर्थ्य के साथ जी उठता है। स्वाभाविक देह बोई जाती है, और आत्मिक देह जी उठती है (1 कुरिन्थियों 15:42-44)।

हमारी सामर्थी, महिमान्वित देहों को पवित्र आत्मा के द्वारा फिर से बनाया जाएगा ताकि वे नैतिक और भौतिक रूप से सिद्ध हो जाएँ। वे अनादर और पाप के प्रति असमर्थ होंगी, तथा रोग और मृत्यु के प्रति अभेद्य होंगी। वास्तव में, जैसा कि पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 15:48, 49 में सिखाना जारी रखा, हमारी पुनरुत्थानित देहें उस महिमान्वित देह के समान होगी जो यीशु ने पुनरुत्थान के समय प्राप्त की थी। पौलुस 2 कुरिन्थियों 3:18 में इसे इस रीति से कहता है :

> जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश करके बदलते जाते हैं (2 कुरिन्थियों 3:18)।

हमारा महिमा प्राप्त करना हमारी अंतिम अवस्था होगी, जब हम अपनी देहों और आत्माओं में पाप की उपस्थिति, प्रभाव और असर से पूरी तरह से स्वतंत्र होंगे, और जब नए आकाश और नई पृथ्वी की महिमामय आशीषों में अंततः प्रवेश करेंगे।

पवित्र आत्मा का बनाए रखने का कार्य, और जो धैर्यपूर्ण स्थिरता वह हमारे जीवनों में उत्पन्न करता है, उससे हमें अद्भुत आत्म-विश्वास और शांति प्राप्त होती है। परमेश्वर का आत्मा हमारे भीतर वास करता है, और इस बात का आश्वासन देता है कि जिस उद्धार का हमने अनुभव करना शुरू कर दिया है उसका कभी अंत न होगा। और वह हमें अंततः और अधिक आशीषें प्रदान करेगा, जिनमें पाप की उपस्थिति और प्रभावों से संपूर्ण स्वतंत्रता, और महिमा में हमारा अंतिम पुनरुत्थान शामिल है। यदि हम सचमुच सुसमाचार पर विश्वास करते हैं, तो हमें कभी इस बात से डरने की जरूरत नहीं होगी कि हमारा उद्धार हमसे छिन जाएगा। इसकी अपेक्षा, हम उस प्रतिज्ञा पर निर्भर रह सकते हैं, और हमें रहना भी चाहिए कि पवित्र आत्मा उस कार्य को पूरा करने में विश्वासयोग्य है जो उसने आरंभ किया है।

उपसंहार

विश्वासी में पवित्र आत्मा पर आधारित हमारे अध्याय में हमने पवित्र आत्मा द्वारा हमें नया जन्म प्रदान करने, बोध कराने, धर्मी ठहराने और पवित्र ठहराने के द्वारा मन-परिवर्तन का अध्ययन किया है। और हमने आत्मा द्वारा विश्वासियों के भीतर वास करने, उन्हें पवित्र ठहराने, उनके लिए मध्यस्थता करने और उन्हें बनाए रखने के कार्य पर ध्यान देने के द्वारा मसीही जीवन में उसकी भूमिका पर विचार किया है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

पवित्र आत्मा-विज्ञान पर आधारित इस श्रृंखला में हमने पवित्र आत्मा के ईश्वरत्व, और उसके व्यक्तित्व तथा कार्य का अध्ययन किया है। हमने त्रिएकता, संसार, कलीसिया और विश्वासी में उसकी सहभागिता के विभिन्न पहलुओं पर विशेष ध्यान दिया है। और हमने देखा है कि आत्मा त्रिएकता का वह व्यक्तित्व है जो सबसे अधिक प्रत्यक्ष रूप में सृष्टि के साथ कार्य करता है, और सबसे अधिक हमारे जीवनों को प्रभावित करता है। यदि हम याद रखें कि उसकी सेवकाइयाँ कितनी महत्वपूर्ण हैं, और वह हमारे साथ किस प्रकार उपस्थित रहता है, और यदि हम उन बातों पर *निर्भर* रहते हैं, तो हम जीवन की कठिनाइयों और तनावों का सामना करने के लिए बेहतर रीति से तैयार हो जाते हैं। और हम इस बात से और अधिक अवगत हो जाएँगे कि हमारा परमेश्वर कितना भला है, और वह कितने अधिक धन्यवाद, स्तुति और विश्वासयोग्यता के योग्य है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.